

अवध राज्य

- स्वतन्त्र राज्य की स्थापना 1722 ई० में शहादत खान ने मुगल बादशाह मो० शाह से अलग होकर किया।
- इन्होंने अपनी राजधानी लखनऊ को बनाया। इन पर आक्रमण के लिए इरान तथा एशिया का नेपोलियन कहा जाने वाला नादिर शाह ने हमला किया। किन्तु इन्होंने नादिर शाह को दिल्ली पर आक्रमण के लिए उकसा दिया। जब नादिर शाह दिल्ली को लूटने के बाद वापस सहादत खां के पास कुछ धन देने के लिए आया तो उनके डर से शहादत खान ने आत्महत्या कर लिया।
- इसके मृत्यु के बाद उसके पुत्र सफदर जंग तथा सुजाउद्दौला के बीच उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ और शासक सुजाउद्दौला बना। सुजाउद्दौला 1764 के बक्सर के युद्ध में तिलगुट सेना में था और पराजित हो गया।
- 1801 ई० में अवध ने वेवेजली द्वारा प्रारंभ की गयी सहायक संधी का स्वीकार कर लिया।
- अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह थे जिनको अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया और अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर उसे अंग्रेजी क्षेत्र में मिला लिया। यही कारण था कि वाजिद अली शाह की पत्नी बेगम हजरत मजल ने 1857 के विद्रोह को भारतीय सैनिकों का अवध से नेतृत्व किया।
- विद्रोह समाप्त होने के बाद बेगम हजरत महल नेपाल चली गयी जहां उनकी मृत्यु हो गयी।

हैदराबाद

- स्वतन्त्र हैदराबाद की स्थापना 1724 ई० में निजामु-उल मूलक ने मुगल बादशाह मो० शाह के समय किया।
- 1725 ई० में मराठा पेशवा बाजीराव-I ने हैदराबाद पर आक्रमण किया और पालखेड़ा के युद्ध में निजाम को पराजित कर दिया।
- पेशवा तथा निजाम के बीच मुंशी शिवगांव की संधी हुयी इस संधि के तहत निजाम ने मराठों की अधीनता स्वीकार की और चौथ तथा सरदेशमुखी नामक कर देने लगा। जब 1798 ई० में लार्ड वेलेजली ने सहायक संधी प्रारम्भ किया तो उसे मनाने वाला पहला राज्य हैदराबाद था।
- स्वतन्त्रता के बाद हैदराबाद (तेलंगाना वाला क्षेत्र) पाकिस्तान में मिलने की इच्छा जतायी। किन्तु सरदार पटेल ने भारतीय सीमा को Operation polo के तहत हैदराबाद पर अधिकार करने के लिए कहा उसी Operation polo भारतीय सेना का पहला अभियान था।

कर्नाटक

- कर्नाटक की स्थापना सादुतुल्ला ने किया। कर्नाटक पर अधिकार करने के लिए फ्रांसिस तथा अंग्रेज आपस में लड़ गए और 3 युद्ध हुआ।
- प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1746-48) :** इस युद्ध का कारण आस्ट्रिया के अधिकार को लेकर अंग्रेजों तथा फ्रांसिसियों के बीच युद्ध हुआ। आस्ट्रिया का उत्तराधिकार का युद्ध एलाशापा की संधि से समाप्त हुआ। इसी संधि के तहत भारत ने प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध समाप्त हो गया।
- द्वितीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1749-54) :** इस युद्ध का कारण फ्रांसिस गर्वनर डुप्ले का महात्वाकांक्षी हलचल होना था। यह युद्ध पाण्डीचेरी के संधि के तहत समाप्त हुआ।
- तृतीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1763) :** इस युद्ध का कारण यूरोप में चल रहे सातवर्षीय युद्ध को माना है। यह युद्ध इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के बीच मुख्य रूप से हुआ। इसी युद्ध के दौरान 1760 में वांडीवास के युद्ध में अंग्रेजों में फ्रांसिसियों को बुरी तरह पराजित कर दिया और भारत से फ्रांसिस सत्ता लगभग समाप्त हो गयी। यह युद्ध 1763 में पेरिस के संधि के तहत समाप्त हो गयी।

मैसूर राज्य

- मैसूर राज्य की स्थापना हैदर अली ने 1755 ई० में किया। हैदर अली एक योग्य शासक था इसने अपने साम्राज्य का विस्तार प्रारम्भ किया और यही अंग्रेजों तथा मैसूर के बीच युद्ध का कारण बना।
- अंग्रेजों तथा मैसूरों के बीच युद्ध लड़े गए।

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767-69) : हैदर अली ने अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को दबाने के लिए अंग्रेजों के साथ यह युद्ध किया था। युद्ध में हैदर अली विजयी रहा और यह युद्ध मद्रास की संधि से समाप्त हुआ।

- मद्रास की संधि की सारी शर्तें हैदरअली ने तय किया था। यही कारण है कि यह संधि सफल नहीं हो सकी और द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध को जन्म दे दिया।

द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84) : इस युद्ध का कारण अंग्रेजों द्वारा हैदर अली का क्षेत्र माह (पाण्डीचेरी) पर अधिकार करना था।

- इस युद्ध में हैदरअली मारा गया और उसका बेटा टिपु सुल्तान युद्ध को आगे बढ़ाया। यह युद्ध बिना किसी निर्णय मंगलौर की संधि से समाप्त हो गया।

तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790-92) : यह युद्ध टिपु सुल्तान ने लड़ा किन्तु इस युद्ध में टिपु सुल्तान पराजित हो गया और वह युद्ध श्रीरंगपट्टनम की संधि से समाप्त हो गया।

चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799) : इस युद्ध में टिपु सुल्तान मारा गया और मैसूर क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

- टिपु सुल्तान ने फ्रांसिसियों के सहयोग से एक नव सेना का गठन किया और फ्रांस के जैकोबीन क्लब (फ्रांस का गरम दल) की सदस्यता ग्रहण की।
- टिपु सुल्तान एक धार्मिक उदार शासक था। इसने शंकराचार्य द्वारा बनवाए गये सिंगर पीठ जो की मैसूर में स्थित है का पुनर्निर्माण करवाया।
- टिपु सुल्तान की अंगूठी पर राम लिखा था। टिपु सुल्तान के तोपों का आकार शेर की तरह था।
- टिपु सुल्तान कहता था कि '100 दिन के गिदड़ के जीवन से अच्छा है कि एक दिन के शेर का जीवन'।

पंजाब राज्य

- इसकी स्थापना सुकरचकिया मिसल के राजा रणजीत सिंह ने किया।
- इसके समय 1795-99 तक अफगानिस्तान का शासक जमान शाह-I ने हमला किया। इस हमले के दौरान जमान शाह के कुछ तोप नदी में गिर गये थे। जिसे राजा रणजीत सिंह ने वापस जमान शाह को दे दिया।
- रणजीत सिंह के इस उदारता से जमान शाह प्रसन्न हुआ और लाहौर को उपहार में दे दिया।
- राजा रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया। राणा रणजीत सिंह ने स्वर्ण मन्दिर पर सोने की चादर चढ़ायी।
- 1809 ई० में रणजीत सिंह तथा चार्ल्स मेटकाफ के बीच अमृतसर की संधि हुई। इस संधि के तहत सतलज नदी को अंग्रेजों तथा पंजाब राज्य के बीच सीमा मान लिया गया।
- 1809 ई० में राणा रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी।
- अगला शासक खडक सिंह बना। खडक सिंह ने अपना वजीर (PM) ध्यानचन्द को बनाया।
- ध्यानचंद एक बोलेबाज व्यक्ति था उसने अगले ही वर्ष खडक सिंह की हत्या कर दी (1840)।
- अगला शासक नैनीहाल बना। इसने भी अपना वजीर ध्यानचन्द्र को ही बनाया। ध्यानचन्द्र ने इसकी भी हत्या कर दी। (1844)
- इसके बाद अगला शासक शेरसिंह बना किन्तु शेर सिंह की 1844 ई. में मृत्यु हो गयी और इनका अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह अगला शासक बना।
- अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार के लिए दो-दो युद्ध लड़े।

प्रथम आंग्ल पंजाब युद्ध (1845-46) : यह युद्ध भोरेवाल की संधि के तहत समाप्त हुआ।

द्वितीय आंग्ल पंजाब युद्ध (1846-49) : इस युद्ध का कारण लार्ड डलहौजी की राज्य हड़पनीति थी। लार्ड डलहौजी ने पंजाब पर अधिकार के लिए चार्ल्स नेपियर नामक एक कुशल सेनापति भेजा था। यह चार्ल्स नेपियर युद्ध में विजय रहा और पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। लार्ड डलहौजी कोहेनूर हीरा पंजाब राज्य से लेकर England की रानी को भेज दिया।

- राणा रणजीत सिंह का अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने अच्छी शिक्षा के लिए लंदन भेज दिया। और उसकी माता को 48000 रु० प्रति वर्ष पेंशन देकर शेखपुर (J & K) में भेज दिया।
- इस प्रकार पंजाब पूरी तरह अंग्रेजों के अधीन हो गया।